डॉक्टर साक्षी नहीं सेक्सी डॉक्टर

“कभी कभी कुछ ऐसे संयोग बन जाते हैं कि घटनाएँ स्वयम् घटती चली जाती हैं। मैं अपने दोस्त के फ़्लैट में जाने के लिये लिफ़्ट में गया तो एक युवती से मुलाकात हुई, आगे की घटना कहानी में !...”

Story By: आमोद कुमार (prayog)
Posted: Wednesday, February 1st, 2017
Categories: कोई मिल गया
Online version: डॉक्टर साक्षी नहीं सेक्सी डॉक्टर

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

डॉक्टर साक्षी नहीं सेक्सी डॉक्टर

दोस्तो, माफ़ी चाहता हूँ कि इस बार मैंने कहानी लिखने में वक़्त ज्यादा लगा दिया लेकिन यक़ीन करना बड़ी मेहनत और शब्दों को कामरस की कलम और स्याही में डुबो कर लिखा है।
कहानी खुद ही पढ़ कर आनन्द लीजिए और अपने विचारों को सांझा करें।

आप सभी पाठक/पाठिकाओं का शुक्रिया जो आपने मेरी दूसरी कहानी
चरमानन्द परमानन्द
को सराहा।
यह कहानी उसी से आगे की घटना है।

अगले दिन उर्वशी और मैंने दो दिन के लिए चण्डीगढ़ घूमने का प्लान बनाया, मैंने अपने दोस्त संजीव को फोन किया- यार तीन दिन के लिए तेरी बाइक चाहिए!
संजीव बोला- मैं दिल्ली से बाहर हूँ, तुझे खुद घर जाकर बाइक लानी होगी, मैं छोटे भाई को फोन कर देता हूँ, वो चाबी दे देगा तुझे!

मैंने शुक्रिया कहा और कॉल काट कर उर्वशी को अपनी ओर खींचा और होंठों को चूमकर उर्वशी की चूचियों को दबाते हुए कहा- अब दो दिन और रात हम चण्डीगढ़ में मजे करेंगे, तुमको जो तैयारी करनी है, कर लो, हम 3 बजे चलेंगे।

मैं वहाँ से निकल कर मेट्रो से वैशाली पहुँचा और वैशाली मेट्रो स्टेशन से ऑटो किया और संजीव के घर की तरफ चल दिया। रास्ते में याद आया कि एक भी कंडोम नहीं हैं मेरे पास तो ऑटो रुकवा कर मेडिकल स्टोर पहुँचा और सेल्स मेन से तीन पीस वाला Banana Flavor वाला कंडोम खरीद लिया।

दोस्तो, मैं कंडोम हमेशा अपने साथ रखता हूँ क्योंकि चूत का कोई भरोसा नहीं किस जगह, किस मोड़ पर मिल जाये।
कंडोम जेब में रखा और साथ वाली जरनल स्टोर से पानी की दो बोतल खरीद वापस ऑटो में आ कर बैठ गया और एक बोतल पानी ऑटो वाले को दिया। ऑटो वाले ने शुक्रिया कहा और पानी पीकर बोतल वापस देने लगा तो मैंने कहा- यह पानी की बोतल आपके लिए है, मेरी पानी की बोतल मेरे पास हैं।

ऑटो वाले ने ऑटो स्टार्ट किया और कुछ देर बाद मुझे इन्दिरापुरम (गाजियाबाद) में मेरी बताई जगह पर उतार दिया, मैंने ऑटो वाले को पैसे दिए और अपार्टमेंट की बिल्डिंग की लिफ्ट में घुसा, लिफ्ट का दरवाजा बंद हो ही रहा था, तभी अचानक हेलो बोलते हुए एक महिला लिफ्ट के आगे आई, मैंने भी बेवकूफी करते हुए दरवाजे को बायें हाथ से रोकने की कोशिश की जिसकी वजह से मेरे बायें हाथ की तर्जनी उंगली दरवाजे में दबते हुए मामूली सी कट गई और खून निकल आया।

मैंने तुरन्त जेब से रुमाल निकाला और उंगली पर दबा लिया।
शायद उस लेडी ने बाहर का बटन दबाया होगा, या अपने आप दरवाजा खुला यह नहीं पता लेकिन दरवाजा खुल गया।

इक हसीना से मुलाक़ात हो गई

दरवाजा खुलते हमारी नज़रें मिली और उसके हुस्न को देखकर दर्द भूल गया।
बड़ी-बड़ी काली आँखें, सुर्ख गुलाबी होंठ, लम्बी सुराही दार गर्दन, काली घनी लम्बी जुल्फें, मेकअप का नामोनिशां नहीं, उम्र का अंदाज़ा नहीं लगा पाया लेकिन दिखने में लगभग 26 से 28 साल, लंबाई 5 फिट 7 इंच के आसपास… गहरे गले का स्लीवलैस ब्लाउज दो अमृत कलशों को छुपाये था, गले की चैन का पेंडल बड़ा किस्मत वाला था, जो

36″ चूचियों की दरार में फंसा हुआ था, फिरोज़ी रंग की साड़ी नाभि से नीचे बांधी हुई थी, 28″ सपाट पेट पर गोल और गहरी नाभि, बार-बार मुझे अपनी और खिंच रही थी, बुला रही थी मुझे, जैसे कह रही हो 'चूम लो मुझे !'

मन कर रहा था लिफ्ट को रोक कर उसकी कमर थाम, अपनी ओर खिंच कर, गुलाबी होंठों की शराब पी जाऊँ।
उस महिला ने मुझे रुमाल में उंगली दबाते देखा और पूछा- आपको चोट लगी क्या ?
यह बात उस वक्त पूछी जब मैं उसके हुस्न के दीदार में खोया था।

मैंने कहा- दरवाजा बंद होने से रोकने के लिए हाथ बढ़ाया तो उंगली दरवाजे के बीच दब गई।
मोहतरमा ने कहा- क्या जरूरत थी ? लिफ्ट कुछ देर बाद नीचे वापस आ जाती, खैर आप मेरे साथ आइये !

और मुझे अपने फ्लैट पर ले गई जो 10वीं फ्लोर पर था, मुझे सोफे पर बैठा कर फर्स्टऐड किट लेकर आई और स्टूल पर बैठ गई, उनकी चूचियों की घाटी में फंसा हुआ पेंडेल ठीक मेरी आँखों के सामने था।

लिफ्ट में तो खुद पर काबू कर लिया था लेकिन इस वक्त सेवादार ने अंगड़ाई लेना शुरू कर दिया था।
उन्होंने रुई पर Dettol लगाकर उंगली साफ़ करने के लिए जैसे ही उंगली पर छुआ तो तीखी जलन हुई और मैंने उनके बायें बाजू को कोहनी के ऊपर के हिस्से को अपने दायें हाथ से कस कर पकड़ लिया।

जैसे ही मैंने उनका बाजू पकड़ा तो उन्होंने अपना हाथ अपनी ओर खींचा, जिससे यह हुआ कि मेरी उंगलियाँ उनकी बाजू और सख्त चूचियों के बीच दब गईं, और उनके मुँह से

ईईईसस की आवाज निकल गई।
हमारी नज़रें आपस में एक हुई और मैंने अपनी अपनी पकड़ से उनका हाथ छोड़ दिया और उंगली को हल्का सा दबाते हुए अंग्रेजी के C शब्द के आकार में घूमा, पूरी चूची का मुआयना कर अपना हाथ हटा लिया।

जिस वक़्त मैंने उंगली फिराई मोहतरमा ने अपनी आँखें बंद करते हुए एक कामुक आह भरी और अपने निचले होंठ को दाँतों में दबाया। मैंने उनको सॉरी बोला तो उन्होंने 'It's OK' बोलते हुए कातिल मुस्कान दी और जख्म को साफ़ करने लगी।

उनकी चूचियों घाटियों को देखकर लंड उफान मारने लगा, मोहतरमा बड़े ध्यान से चोरी-चोरी मेरे लंड की देख रही थी और अब मेरा लंड खूंखार होने लगा था, शायद वो भी समझ गई थी मेरी हालात!

उन्होंने ज़ख्म से खून साफ़ किया और दवाई लगा कर उंगली में पट्टी बांधने लगी। पट्टी बांधते वक़्त दो बार उनकी कोहनी मेरे लंड से टकराई, शायद मोहतरमा ने लंड का मुआयना किया।
पट्टी बंधने के बाद और फर्स्ट ऐड किट बन्द करके टेबल पर रख दी और शायद हाथ धोने अंदर चली गई।

कुछ देर बाद वो आई और उन्होंने मुझे एक पर्चा दिया, कहा- मैंने दवाई लिख दी है, याद से ले लेना, आपका जख्म जल्दी भर जायेगा और दर्द होने पर पेन किलर लेने के लिए कहा।

जिस पर्ची पर दवाई लिखी थी वो डॉ. का लेटरहेड था, नाम लिखा था 'डॉ. साक्षी गुप्ता' मैंने नाम पढ़ने के बाद उनकी तरफ देखा तो उन्होंने कहा- जी, मैं डॉक्टर हूँ!
और मैंने कहा कि मैं ध्यान से दवाई ले लूंगा।

साक्षी ने कहा अगर कोई जरूरत हो तो फ़ोन कर लेना, नंबर लिखा है।
मैंने कहा- जी जरूर!

फिर उन्होंने पूछा- क्या लोगे, चाय, काफी या ठंडा?
मैंने कहा- नहीं शुक्रिया, मुझे कुछ काम है, अब मुझे चलना चाहिए।

तो डॉ. साहिबा अपने हाथों को अपने सीने पर बांध चूचियों को उठा मुस्काते हुए बोली- मैं कॉफी इतनी बेकार नहीं बनाती, एक बार पियोगे तो याद करोगे और हर बार आओगे कॉफ़ी पीने! और वैसे भी कुछ देर मुझे भी आपकी कंपनी भी मिल जायेगी।

मैंने भी सोचा कि कुछ देर हुस्न का दीदार कॉफ़ी के बहाने ही सही, और क्या पता शायद नत्थूलाल का भी इलाज डॉ. साक्षी ही कर दे, मैंने हाँ कर दी।

साक्षी जाने के लिए मुड़ी तो मैं 34″ के मस्त नितम्बों की मस्त देखते हुए उसकी चल में खो सा गया। कुछ देर बाद मेरी नज़र किचन में खड़ी साक्षी पर गई, जो कॉफ़ी बना रही थी। मैं उनको निहारते हुए अपने लंड को पैंट के ऊपर से एडजस्ट कर मल्लिका-ए-हुस्न को चोदने का तरीका सोचने लगा।

धीरे धीरे दोनों की अन्तर्वासना जाग रही थी

कुछ देर बाद वो कॉफ़ी के मग ट्रे में लिए हुए आई और ट्रे टेबल पर रखने के लिए झुकी तो तो ब्लाउज़ की जेल में जकड़ी हुई दो सख्त चूचियों की सेक्सी क्लीवेज देख मेरे लंड अकड़न बढ़ाने लगी, साक्षी भी ट्रे रख कर सामने वाले सोफे पर बैठी और एक मग उठा कर मुझे मेरी तरफ बढ़ाया और कहा- क्या हुआ? क्या सोच रहे हो?

मैंने उनकी तरफ देखते हुए कहा- जी कुछ नहीं!

फिर साक्षी और मैं बात करने लगे। साक्षी की नज़र मेरे लंड पर थी और चोरी-चोरी लंड को अंगड़ाइयां लेते हुए देख रही थी।

उन्होंने सब से पहले मेरा नाम पूछा।
मैंने कहा- जी, मेरा नाम आमोद है।
फिर बोली- आपको पहले कभी नहीं देखा यहाँ पर ? आप अभी शिफ्ट हुए हो यहाँ ?
मैंने कहा- नहीं, मैं यहाँ अपने दोस्त से मिलने आया हूँ। जो इस बिल्डिंग में रहता है’।
उससे मिलने आया था और लिफ्ट में ये सब हो गया।

तो साक्षी बोली- माफ़ करना, मेरी वजह से आपको चोट लग गई।
मैंने कहा- नहीं, आपकी वजह से नहीं लगी, बल्कि मैं ही जल्दबाजी कर गया, दरवाजे को खोलने वाला बटन दबाना ध्यान में ही नहीं आया।

तभी दरवाजे की घंटी बजी, मग को टेबल पर रख कर वो दरवाजा खोलने गई, और मैं साक्षी की चूचींयों के ख्याल में खोया ऊपर से ही लंड सहला रहा था, तभी मोहतरमा हाथ में कोई पैकेट लिए आई, पैकेट उन्होंने वही टेबल पर रखा और झुक कर कॉफ़ी वाला मग उठाया तो, साक्षी का पल्लू गिर गया जिसे साक्षी ने संभल लिया।

अब सेवादार बुरी तरह अकड़ चुका था और फिर साक्षी मेरे साथ ही उसी सोफे पर बैठ गई और कॉफ़ी पीने लगी, अपने बारे में बताने लगी।
साक्षी की नज़र मेरी पैंट के उभार पर थी।

मैंने बातें करते हुए लंड सहलाया तो साक्षी आह निकल गई और उसने मेरी तरफ देखा, हम दोनों एक दूसरे को देख रहे थे, प्यास दोनों तरफ थी ये आँखें बखूबी बता रही थी।

मैंने उनके होंठों की तरफ देखते हुए जैसे चेहरे को उनकी तरफ बढ़ाया उनके होंठों पर

हल्की सी कंपकपी भरी थिरकन को देख मैंने वापस पीछे कर लिया और उनके चेहरे की तरफ देखा और देखता ही रहा उनकी बंद आँखों को, चेहरे पर छाई शर्म की घबराहट को!

कुछ पल बाद उन्होंने आँखें खोली, मैंने उनकी तरफ देखा और मुस्कुरा दिया।
उन्होंने शर्म से अपने आँखें झुका ली, मैंने उन हाथ को हल्का सा छुआ तो उन्होंने नज़रें उठा कर मेरी तरफ देखा और एक दूसरे को देखते हुए हम दोनों के होंठ एक दूसरे से कब जुड़ गए पता नहीं चला।

साक्षी के हाथ से कॉफ़ी का मग लिया और टेबल पर रख दिया, साक्षी मेरे बालों में हाथ फिरते हुए मेरे साथ होठों के रसपान की जुगलबंदी करने लगी।
अपनी उँगलियों से साक्षी के पेट को छुआ और अपने हाथ को साक्षी के पेट पर घूमते हुए कमर की तरफ ले गया और कमर पकड़ कर उसे अपने तरफ खींच लिया।

कभी हम एक-दूसरे के होंठों को चूसते कभी एक दूसरे की जीभ, साक्षी तो मेरे होंठों को ऐसे चूस रही थी जैसे बरसों की प्यासी हो। साक्षी की कमर थाम उसको अपने साथ ले कर सोफे से खड़ा हुआ और साक्षी भी मेरे गले में अपनी बाहें डाले चूमते हुए खड़ी हुई और चूमते हुए साक्षी मुझे अपनी ओर खींचते हुए दीवार पर कमर लगा कर अपने होंठों की शराब पिलाने लगी।

स्मूच करते हुए धीरे धीरे मैं अपने हाथ को साक्षी की चूचियों पर ले गया और ब्लाउज़ के ऊपर से ही उसकी चूचियों पर उंगलियाँ फिराने लगा।
ब्लाउज़ के गले से उंगली डाल कर चूची सहलाई और साक्षी ने अपने होंठों को मेरे होंठों से हटाया और आह भरते हुए मेरी गर्दन पर चूमने लगी।

मैं अपने हाथों से उसके ब्लाउज़ के हुक खोलने लगा। सच में यारो, ब्लाउज़ के एक-एक हुक को खोलते हुए जो आनन्द आता है, उसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है।

साक्षी के ब्लाउज़ के 3 हुक खोल दिए और साक्षी की चूचियाँ ब्रा के ऊपर से दबाने लगा और फिर अपना हाथ पीछे ले जाकर ब्लाउज़ की डोरी खोल दी जिस से ब्लाउज़ उसके कंधों से ढीला हो गया और अंत में मैंने ब्लाउज़ का अंतिम हुक खोल कर ब्लाउज़ को कंधों से नीचे सरकाते हुए उतार दिया।

साक्षी ने भी अपने हाथों को नीचे की तरफ सीधा करके ब्लाउज़ उतरने में काफी मदद की। ब्लाउज उतारते हुए साक्षी ने ब्लाउज के मैचिंग की ब्रा के कैदखाने कैद दो अमृत कलश देखे, ब्लाउज़ उतरने के बाद साक्षी के हाथ मैंने जीन्स के ऊपर से अपने लंड पर रख, उसकी मुट्ठी में लंड देकर और उसको चूमते हुए चूचियों को ब्रा के अंदर हाथ डाल कर दबाने लगा।

साक्षी कभी मेरे कान को चूमती, कभी कान को दाँतों से काट हुए जीन्स के ऊपर से लंड को बार-बार मुट्ठी में दबाने लगी।
यह हिंदी सेक्स कहानी आप अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं!

मैंने अपने हाथ को उसकी कमर पर फिराते हुए उसके पेटीकोट का नाड़ा खोज लिया और धीरे से खोल दिया और अपने दोनों हाथों से नाड़े को धीरे-धीरे पूरी तरह से कमर के चारों तरफ से ढीला करके छोड़ दिया, उसकी साड़ी पेटीकोट सहित उसके पैरों में जा गिरी।

साक्षी भी मेरे लंड को छोड़ मेरी टी-शर्ट को उतारने के लिए ऊपर उठाने लगी और टी-शर्ट और बनियान एक साथ उतार कर अलग कर दी और मेरे निप्पल पर अपनी जीभ घुमाई, निप्पल मुँह में लेकर चूसते हुए होंठों में दबा कर खींचने लगी।

साक्षी की इस हरकत से मैं मदहोश होने लगा, न जाने कब मेरी इस मदहोशी में उसने मेरी बेल्ट और जीन्स का बटन खोल लिया पता ही नहीं चला, और फिर मेरी जीन्स अपने हाथों से पकड़ कर मेरी छाती और पेट को चूमते हुए घुटनों के बल बैठ गई और जीन्स को

बैठते हुए धीरे-धीरे खींच कर घुटनों तक उतार दिया, अंडरवियर के ऊपर से ही लंड को अपने गालों से सहलाने लगी, लंड को अंडरवियर के ऊपर से चूमते हुए मुझे देखने लगी।

मैं भी अपने हाथ को उसके सिर की पीछे से उसके बालों में फिराने लगा।

साक्षी उठी, मुझे सोफे पर धकेल कर बैठा दिया और खुद घुटनों के बल बैठ कर लंड को ऊपर से चाटने लगी।
कुछ पल बाद साक्षी ने अंडरवियर में हाथ डाल कर मेरा लंड पकड़ कर बाहर निकाल कर सहलाते हुए लंड की खाल नीचे कर सुर्ख लाल और खूंखार हो चुके नत्थूलाल सर-फटे को अपनी जीभ से चाटने लगी और मेरी जीन्स और अंडरवियर को मेरे पैरों से निकाल कर अलग कर दिया।

साक्षी कभी लंड को मुख में अंदर-बाहर करती और सुपारे को दाँत से काटती, साक्षी नत्थूलाल के सिर की दरार में जीभ नुकीले कर के अंदर डालने लगी।
नुकीली जीभ का बहुत ज़रा सा हिस्सा नत्थूलाल के फाटे सिर की दरार के अन्दर मामूली सा घुसा तो लंड पूरा गनगना गया और एक झन्नाटेदार सरसराहट पूरे शरीर में दौड़ गई और मेरी आहें निकलने लगी।

मैं साक्षी के सिर के पीछे हाथ ले गया और उसके बालों को मुट्ठी में भर लिया, कभी साक्षी अपनी जीभ सुपारे के इर्द-गिर्द गोल गोल घुमाती, कभी टोपा मुँह में भर के चूसने लगती, कभी लंड को जीभ से टट्टों तक चाटती, कभी टट्टों को बारी-बारी मुँह में भर कर चूसती, कुछ देर बाद मैंने साक्षी को पकड़ कर अपनी ओर खींचा और उसके होंठों को चूमते हुए उसको सोफे पे लिटा दिया, उसकी कमर के नीचे हाथ ले जाकर ब्रा का हुक खोल ब्रा उतार दी और दोनों चूचियों को आज़ाद कर दिया।

दो बड़े अमृत कलश और उन पर बादामी रंग के निप्पल देख, मैं खुद को रोक न सका

दोस्तों और झुक कर साक्षी के दाईं चूची को अपने हाथ में भर लिया और निप्पल अपने होंठों में ले कर चूसना शुरू किया तो साक्षी ने जोर की आह भरी और सोफे के तकिये को मुट्ठियों में भींच लिया, मैं बारी-बारी दोनों निप्पल चूसने लगा।

फिर अपनी जीभ उसकी चूचियों पर घूमते हुए साक्षी की क्लीवेज से होते हुए मैं नीचे की तरफ बढ़ने लगा और साक्षी की नाभि पर रुक कर उसकी नाभि चूमने लगा।

साक्षी की आहें अब मादक सिसकारियों में बदलने लगी थी, मैंने अपनी जीभ को नुकीला किया और उसकी नाभि में घुसा कर कभी नाभि खोदता, कभी नाभि के चारों तरफ घूमते हुए और अपने हाथ से उसकी जांघों को सहलाने लगा।

कुछ देर बाद हाथ पेंटी तक पहुँचा और पेंटी के ऊपर से साक्षी की चूत को छुआ तो साक्षी जोर से सिहर गई और सिसकारी लेते हुए ऊपर की तरफ उठी और खुद को कोहनी के सहारे कर अपना सर पीछे के ओर कर के जोर से आहें भरने लगी।

मैं उसकी नाभि और पेट चूमते हुए, नीचे की तरफ बढ़ने लगा और दांतों से उसकी पेंटी पकड़ कर खींचते हुए नीचे सरकाने की नाकाम कोशिश की।

मैं उठा और उसके उसके पैरों की तरफ बैठ कर निर्वस्त्र काममूरत साक्षी को निहारने लगा।

कुछ पल बाद मैं साक्षी के दोनों पैरों को पकड़ पैरों की उंगलियों को चूमने लगा, कभी उसके पैर का अंगूठा चूसता कभी उँगलियों के बीच की में जीभ डाल कर जीभ से चाटता। साक्षी अपनी मुट्ठियों को भींच कर सिसकारियाँ लेती।

साक्षी के पैरों को चूमते हुए ऊपर की तरफ बढ़ने लगा और उसकी जांघों को चाटते हुए, जाँघों पर चूमते हुए हल्के से काटने लगा। फिर मैंने साक्षी की पेंटी में उंगलियाँ फंसा कर पेंटी उतारने के लिए खींची तो साक्षी ने अपने हाथों से सहारा लेते हुए अपनी गांड ऊपर

उठाई जिससे पेंटी उतरने में आसानी हुई।

पूरी नंगी डॉक्टर

पेंटी उतरने के बाद साक्षी ने अपने दोनों हाथों से चूत को छुपा लिया, मैंने उसके हाथ को चूमते हुए चूत से हाथों का नकाब हटा दिया। ट्रिम की हुई झांटों के बीच चूत बड़ी आकर्षक लग रही थी।

मैंने अपनी उंगली से चूत को छुआ तो साक्षी ने सिसकारी भरी, फिर मैंने साक्षी की चूत के होंठों को अपनी उंगलियों से खोला, गुलाबी रंगत भरे चूत के अंदरूनी भाग को अपनी जीभ से चाटने के लिए झुका और जैसे ही जीभ से चूत को छुआ तो साक्षी की मादक किलकारी निकली, उसकी चूत की मादक सुगंध मेरे नाक के नथुनों में घुस कर मुझे मदहोश करने लगी।

मैं उसकी चूत की पंखुड़ियों को अपने लबों से छू कर सहलाने लगा और चूत के लबों को अपने होंठों में दबा कर चूसते हुए अपने जीभ चूत की गहराई में सरका दिया और चूत अंदर तक चाटने चूसने लगा।
सिसकारियां भरते हुए साक्षी कामानन्द के सरोवर में गोते लगाते, बड़बड़ाते हुए बोली- आमोद, प्लीज सक हार्ड, यू आर सो गुड, यएसस्स, आह, उम्म्ह… अहह… हय… याह… हहहहह!

साक्षी ने अपने दोनों हाथों से मेरे सिर को अपनी चूत पर दबाकर अपने पैर मेरी गर्दन पर लपेट लिए, मैं उसकी चूत अंदर तक चाटने लगा, उसकी चूत को चूस कर अपनी लार से तर कर दिया।

चूत चूसते हुए मैं चोट लगे हाथ से साक्षी की चूचियों को हौले-हौले दबाने लगा और अपने

दूसरे हाथ की उंगली से उसके होंटों को छूने लगा तो साक्षी मेरी उंगली मुँह में लेकर चूसने लगी, मैं साक्षी की चूचियों को बारी बारी दबाते हुए, अपने अंगूठे से निप्पल पर रगड़ते हुए गोलगोल घुमाने लगा।

साक्षी ने अपने पैरों की पकड़ से मेरी गर्दन छोड़ दी। लार से तर उंगली उसके मुँह से निकाल कर उसकी चूत में धीरे से अंदर डाल दी और चूत के अंदर बाहर करने लगा और अंगूठे से चूत के दाने को मसलने लगा।

साक्षी ने मुझे कहा- प्लीज बैडरूम में चलो, सोफे पर जगह कम है।
मैंने उठ कर पैंट की जेब से कंडोम का पैक निकाला, साक्षी को अपने बाँहों में उठा कर बैडरूम में ले आया और बिस्तर पर लिटाकर साक्षी के साथ 69 मुद्रा में लेट गया और उसको अपने ऊपर ले कर साक्षी की चूत को अपने मुंह के कब्जे में ले कर चूसने लगा, साक्षी मेरा लंड मुँह में लेकर चूसने लगी।

साक्षी लंड चूसते हुए, अपनी चूत मेरे मुँह पर रगड़ रही थी और मुठ मारते हुए लंड चूसने में मशगूल थी, मैं अपनी जीभ से चूत के किनारों पर और चूत के दाने को चाटते हुए सहलाने लगा।

साक्षी कभी अपनी जीभ नत्थूलाल के चारों ओर घुमाती, कभी उसके फटे हुए सिर पर तो कभी चूसते हुए दांतों से काटती। मैं कभी उसकी चूत चूसता और जीभ से चूत चोदता, तो कभी उसकी चूत को दांतों से हल्का सा काटते हुए चूत अपने मुँह में भर लेता।

कुछ देर बाद साक्षी मेरे ऊपर से हटी, बोली- आमोद प्लीज फ़क मी, अब बर्दाश्त नहीं होता!
मैंने कंडोम का पैकेट साक्षी को दिया और उसके होंठों को चूमने लगा, चूचियों को दबाने लगा।

उसने कंडोम का पैकेट खोल कर कंडोम लंड पर चढ़ा दिया और मेरे ऊपर लेट गई।
मैंने तुरंत साक्षी को पलट कर अपने नीचे लिया और उसकी टांगें खोल कर अपना लंड उसकी चूत पर रख कर रगड़ने लगा, उसको तड़पते हुए उसकी एक चूची अपनी मुट्ठी में भर कर उसके निप्पल पर जीभ फिरा कर चूची मुँह में ले कर चूसना शुरू किया।

साक्षी सिसकियां लेते हुए बोली- ओहह हहह रज्ज्जत प्लीज तड़पाओ मत, प्लीज फ़क मी!
मैंने साक्षी को ज्यादा तड़पना जरूरी नहीं समझा और साक्षी के दोनो पैरों को उठा कर कंधे पर रखा और चूत की दरार में लंड सेट किया और अंदर धकेल दिया।

साक्षी ने आह भरी और अपने हाथों को मेरी गर्दन में डाल कर मुझे अपनी ओर खींच कर अपने अधरों को मेरे अधरों से जोड़ कर चूमने लगी।
मैं धीरे-धीरे लंड चूत के अंदर सरकाते हुए लंड आधा अंदर कर दिया और हल्के धक्के लगाने लगा।

साक्षी की मदहोशी भरी आहें और सिसकियाँ भरी आवाज़ मेरे कान में गर्म हवा के साथ जब आई तो मैंने अपने लंड को बाहर खींच कर एक झटके में चूत की गहराई में उतार दिया जिससे साक्षी जोर से चीखी और अपने नाखूनों को पीठ में गड़ा कर मुझे अपने अंदर खींचने लगी और बोली- कुछ पल ऐसे ही रुको!

साक्षी जब सामान्य हुई तो अपनी गांड हिला कर चुदाई करने का इशारा दिया, मैंने भी चूत में लंड अंदर बाहर करते हुए धक्के मारने शुरू किये, साक्षी हर धक्के पर मदहोशी में आहह… आहह… करते हुए चूत चुदाई का मजा लेने लगी और मदहोशी में बोली- फ़क मी हार्ड आमोद!

मैंने अपने लंड को तेज़ी से अंदर बाहर करना शुरू किया, लंड को बाहर खींचता और पूरा

अंदर तक डाल देता, जिससे थप-थप थप-थप का संगीत सा बजने लगा, साक्षी भी अपने कूल्हे हिला हिला कर नीचे से ऊपर की तरफ धक्के मारते हुए चुदने लगी।

कुछ देर बाद मैं साक्षी के ऊपर से हटा, उसे घुमा कर घोड़ी बनाया, उसके कानों पर से जीभ फिराता हुआ गर्दन पर दांतों से काटते हुए उसकी कमर को चूमने लगा और अपने दोनों हाथों से उसकी दोनों चूचियों को दबाने लगा।

चुदाई का खुमार मुझ पर भी ऐसा हावी था कि मैं अपनी चोट का दर्द ही महसूस नहीं कर पा रहा था और उसकी चूचियों को दबाते हुए उसके निप्पलों को पकड़ कर खींचने लगा।

उसकी कमर पर काटते हुए मैंने दोनों हाथों को उसके कूल्हों पर रखा, कूल्हे दबाते हुए अपने दांतों में लेकर काट लिया जिससे साक्षी की मदहोशी भरी सीत्कार निकली।

अपने लंड को पीछे से उसकी चूत पर रगड़ते हुए मैं चूत में लंड डाल कर उसकी मस्त गांड को दबाते हुए धक्के मारने लगा, साक्षी भी तेज़ सिसकियां भरने लगी और अपनी गांड को आगे पीछे करते हुए चूत की गहराइयों में लंड लेने लगी, मैं उसकी गांड पर कभी चटाक चटाक मारता, कभी मुट्ठी में जोर से भींच लेता।

उसकी कमर पर झुक कर उसके कन्धों को चूमने लगा और उसके बालों को लगाम की तरह अपने हाथों में थाम कर घोड़ी बनी साक्षी को उसके कूल्हों पर अपनी हथेली से चाबुक की तरह चांटे मारते हुए चोदने लगा।

घोड़ी अवस्था में चोदते हुए साक्षी बोली- तुमने तो घोड़ी की सवारी कर ली, मैं भी घोड़े की सवारी करना चाहती हूँ।

मैं लेट गया, साक्षी मेरे ऊपर आ आई और लंड को चूत के होंठों पर कुछ क्षण रगड़ा और लंड पर बैठ गई।

लंड अंदर जाते हुए चुदाई की मदहोशी में उसने अपनी आँखें बंद कर अपने निचले होंठों को दांतों में दबा कर आहह भरते हुए अपनी कमर आगे पीछे चलने लगी और मेरे हाथों को अपनी चूचियों पर रख कर दबाने लगी।

मैं साक्षी को अपने ऊपर झुका कर उसके निप्पल मुँह में लेकर काटते हुए चूसने लगा और साक्षी की घुड़सवारी में मदद करते हुए मैं नीचे से ऊपर की तरफ धक्के मारते हुए उसे चोदने लगा।

साक्षी ने मेरी छाती पर हाथ रख कर मुझे बिस्तर की तरफ धकेल कर अपनी जीभ और होंठों से मेरे निप्पल चूसने लगी और लंड पर जोर जोर से कूदने लगी।

बस कुछ ही पल में साक्षी झड़ने की तरफ बढ़ रही थी और मेरा भी ज्वालामुखी फूटने की कगार पर था, मैं साक्षी को थाम कर उठा और साक्षी को उसकी पीठ की तरफ धकेलते हुए बिना लंड चूत से बाहर निकल उसको अपने नीचे लिया और उसकी टांगों को मोड़ कर घुटने उसकी चूचियों पर लगा कर जोर जोर से धक्के मारते हुए साक्षी के ऊपर लेट कर उसके होंठों को चूसते हुए उसकी ठोड़ी पर काटते हुए, गर्दन चूमते हुए उसके कान को मुँह में लेकर चूसने लगा और साक्षी की चूत में तेज़ झटके देते हुए चोदने लगा।

कुछ ही देर में साक्षी चरम सीमा पर पहुँच गई, उसका चूत द्रव बह निकला, पूरी ताकत से अपने नाखून मेरी पीठ में गड़ाते हुए मुझे अपनी ओर खींच कर मुझ में सामने लगी, और एक चीख के साथ झड़ गई।

मैं भी 15-20 झटके देते हुए उसकी चूत में झड़ गया और अंतिम धक्का मारते हुए पूरा लंड चूत की गहराई में गाड़ दिया और उसके ऊपर ढेर हो गया।
हम दोनों ने एक दूसरे को पूरी ताकत से भींच लिया।

साक्षी अपनी उखड़ती साँसों को काबू करते हुए मेरे बालों में हाथ फिराने लगी और मेरा चेहरा अपनी चूचियों पर दबा कर मुझे बाँहों में भर लिया।
मेरा वीर्य कंडोम में कैद हो चुका था।

कुछ पल बाद हम अलग हुए, मैंने कंडोम उतारा वहाँ रखे अख़बार में लपेट कर बेड के नीचे किनारे रख दिया और एक दूसरे को चूमते हुए बाँहों में ले कर लेट गए।

दोस्तो, कहानी लिखने में हुई त्रुटियों के लिए क्षमा करें, मुझे आपके जवाबों का इंतज़ार रहेगा।
पिछली कहानियां पढ़ कर कई मेल आये थे, सब उर्वशी का नंबर मांग रहे थे, मेरा आप सब पाठकों से नम्र निवेदन है कृपया किसी भी नंबर न मांगें।

आपका
uniqueanonymousluv@gmail.com

Other stories you may be interested in

क्रिकेट का खेल : सविता भाभी वीडियो

सविता भाभी के साथ खेलिए क्रिकेट का खेल ! सविता भाभी वीकएंड में भी पति के घर में ना रहने के कारण काफी बोर महसूस कर रही थीं किसी काम में मन नहीं लग रहा था। इस समय वो सिर्फ एक […]
Full Story >>>

मेरी सीनियर ने मेरी परफॉर्मेंस रिपोर्ट बनायी

ऑफिस बॉस सेक्स कहानी में पढ़ें कि कंपनी में मेरी परफॉर्मेंस ठीक नहीं चल रही थी। एक लेडी मैनेजर मेरी परफॉर्मेंस सुधारने के लिए आयी। उसने मेरा काम कैसे देखा ? कैसे हो दोस्तो ! मैं अजय, अपनी पुरानी प्रकाशित कहानियों नई […]
Full Story >>>

जवान लड़कों से चूत गांड फटवायी- 2

मैंने किया सेक्स विद बॉस इन ऑफिस ! मैं लोकल बस में चार लड़कों से अपने जिस्म को मसलवा कर दफ्तर पहुंची तो मेरी अन्तर्वासना उफान पर थी. हिंदी कहानी के प्रथम भाग सेक्स लाइफ में कुछ नया करने की चाहत […]
Full Story >>>

किरायेदार की बीवी की चुत की भूख मिटाई

गर्म भाभी की चुदाई हिंदी में पढ़ें. वो हमारे यहाँ किराये पर रहते थे. मैंने उनकी सुन्दरता देख उनसे दोस्ती की. मैं उसे चोदना चाहता था. मैंने कैसे भाभी को सेक्स के लिए मनाया ? दोस्तो, मैं रोहन आज आपको एक […]
Full Story >>>

जवान लड़कों से चूत गांड फटवायी- 1

Xxx बस सेक्स कहानी में पढ़ें कि एक दिन मुझे सूझा कि मैं लोकल बस में सफर करके अपने जिस्म से मर्दों को ललचाऊँगी. टॉप स्कर्ट पहनकर मैं लोकल स्टॉप पर आ गयी. यह कहानी सुनें. दोस्तो, मैं फेहमिना इकबाल […]
Full Story >>>